BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

. बिहार में गांधीवादी आंदोलन : चंपारण से भारत छोड़ो आंदोलन तक

डॉ. राजीव कुमार
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
एस एन एस वाई डिग्री कॉलेज, रामबाग, पूर्णियाँ, बिहार

परिचय :

बिहार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में गांधीवादी विचारधारा का प्रमुख केंद्र रहा है। महात्मा गांधी के भारत में आगमन के बाद जिन आंदोलनों ने राष्ट्रीय चेतना को स्वर दिया, उनमें बिहार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। चंपारण सत्याग्रह (1917) से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन (1942) तक, बिहार ने न केवल जनांदोलनों की भूमि के रूप में कार्य किया, बल्कि गांधीवादी रणनीति और विचारों का व्यवहारिक प्रयोगस्थल भी बना। 1917 में चंपारण में जब गांधीजी ने नीलहों के अत्याचार के खिलाफ किसानों के पक्ष में सत्याग्रह किया, तो यह उनका भारत में पहला जनांदोलन था। इसी आंदोलन ने गांधी को ''महात्मा'' और आम जनों को राजनीतिक चेतना दी। यह आंदोलन केवल एक किसान आंदोलन नहीं था, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अहिंसा और सत्याग्रह जैसे गांधीवादी सिद्धांतों की नींव रखने वाला ऐतिहासिक मोड़ था। इसके बाद बिहार में असहयोग आंदोलन (1920–22), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और अंततः भारत छोड़ो आंदोलन (1942) जैसे आंदोलनों में जनता की व्यापक भागीदारी देखने को मिली। इन सभी आंदोलनों में गांधीवादी नेतृत्व और विचारधारा स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई।

बिहार की जनता, विशेषकर किसानों, मजदूरों, विद्यार्थियों और महिलाओं ने गांधीजी की पुकार पर जबरदस्त उत्साह के साथ भाग लिया। जयप्रकाश नारायण, राजेंद्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिन्हा, सीताराम केशरी जैसे नेताओं ने गांधी के सिद्धांतों को आत्मसात कर पूरे आंदोलन को जीवंत बना दिया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बिहार के अनेक क्षेत्रों में हिंसक और अहिंसक संघर्ष हुए, जिससे यह स्पष्ट होता है कि गांधीवादी आंदोलन बिहार में केवल विचार नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की एक जीवंत प्रक्रिया थी। चंपारण से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक का गांधीवादी आंदोलन बिहार के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश में व्यापक परिवर्तन का प्रतीक रहा है। इसने न केवल राष्ट्रीय आंदोलन को दिशा दी, बल्कि स्वतंत्र भारत के लिए जनतांत्रिक मूल्यों की नींव भी रखी।

मुख्य शब्द : जनआकर्षण, संघर्ष, सत्य और अहिंसा, बौद्धिक, तीनकठिया।

बिहार का ऐतिहासिक संदर्भ

बिहार का ऐतिहासिक संदर्भ महात्मा गांधी के आंदोलनों की पृष्ठभूमि को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। गांधीजी के चंपारण सत्याग्रह और अन्य आंदोलनों के पीछे की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ न केवल इस क्षेत्र की तत्कालीन स्थिति को दर्शाती हैं, बल्कि यह भी स्पष्ट करती हैं कि क्यों बिहार गांधीवादी प्रयोगों के लिए उपयुक्त भूमि बना। ब्रिटिश शासन से पूर्व बिहार ऐतिहासिक रूप से समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत का केंद्र रहा है। मगध, वैशाली और नालंदा जैसे ऐतिहासिक नगर शिक्षा, धर्म और ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी रहे। लेकिन मुगल शासन और फिर ब्रिटिश उपनिवेशवाद के आगमन के साथ ही बिहार की सामाजिक और आर्थिक संरचना में भारी गिरावट आई। अंग्रेजों द्वारा भूमि व्यवस्था में स्थायी बंदोबस्त प्रणाली लागू करने के परिणामस्वरूप जमींदार वर्ग सशक्त हो गया, जबकि किसान वर्ग शोषित और आर्थिक रूप से

@2025 Bihar Shodh Samaagam

कमजोर हो गया। यह असमान संरचना आगे चलकर अंग्रेजी शासन के खिलाफ आक्रोश का प्रमुख कारण बनी। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में बिहार में अनेक सामाजिक कुरीतियाँ व्याप्त थीं, जैसे जातिगत भेदभाव, अशिक्षा, बाल विवाह, दहेज प्रथा और महिला उपेक्षा।

सामाजिक सुधार आंदोलनों की कमी और औद्योगिकीकरण के अभाव में समाज स्थिर और जड़वत बना रहा। आर्थिक रूप से यह क्षेत्र कृषि पर निर्भर था, लेकिन ब्रिटिश नीतियों और व्यापारिक लूट ने इसे बेहद कमजोर कर दिया। नील की खेती जैसे मामलों में किसानों को जबरन खेती के लिए बाध्य किया जाता था, जिससे उनके जीवन में अत्याचार और निर्धनता की सीमा पार हो गई थी। राजनीतिक रूप से भी बिहार की स्थिति अपेक्षाकृत शांत दिखाई देती थी, किंतु अंदर ही अंदर आक्रोश और असंतोष पनप रहा था। बंगाल विभाजन (1905) और स्वदेशी आंदोलन के प्रभाव बिहार में भी दिखने लगे थे, परंतु यह प्रभाव सीमित था और उसे संगठित नेतृत्व की आवश्यकता थी। यह नेतृत्व गांधीजी के आगमन के साथ मिला, जब 1917 में चंपारण सत्याग्रह के माध्यम से उन्होंने किसानों के कष्टों को राष्ट्रीय मंच पर लाया। यह आंदोलन इस बात का संकेत था कि बिहार अब केवल एक ऐतिहासिक भूमि नहीं, बल्कि एक क्रांतिकारी भूमि बनने को तैयार है।

चंपारण से पहले भी बिहार के कुछ क्षेत्रों में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जनविरोध के प्रयास हुए थे। 1857 के विद्रोह में बिहारी सैनिकों और जनता की महत्वपूर्ण भूमिका रही, विशेषकर बाबू कुंवर सिंह की वीरता आज भी प्रेरणास्रोत है। हालांकि यह विद्रोह असफल रहा, लेकिन यह बिहार की क्रांतिकारी चेतना का प्रमाण था।

20वीं सदी की शुरुआत में बिहार में राजनीतिक संगठनों और कांग्रेस की गतिविधियाँ धीरे–धीरे सक्रिय हो रही थीं, लेकिन इनमें गांधीजी के आगमन से पहले वह जनआकर्षण और नैतिक बल नहीं था, जो जनता को संगठित कर सके। गांधीजी के आंदोलनों ने इन सभी परतों को छेड़ा, उन्होंने किसानों की पीड़ा को समझा, महिलाओं को आंदोलन में जोड़ा, युवाओं में राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत की और सामाजिक सुधार के प्रश्नों को राजनीतिक चेतना से जोड़ा। चंपारण सत्याग्रह केवल एक आंदोलन नहीं था, बल्कि यह बिहार की सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के खिलाफ एक व्यापक प्रतिरोध का प्रारंभ था। इसके बाद गांधीजी के नेतृत्व में हुए असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलनों में बिहार की जनता ने अभूतपूर्व साहस और जागरूकता का प्रदर्शन किया। इस प्रकार, गांधीजी के आंदोलनों का बिहार के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ में विशेष महत्व रहा। उन्होंने न केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष को दिशा दी, बल्कि बिहार की जनता को आत्मबल, आत्मनिर्भरता और नैतिक चेतना से भी सम्पन्न किया। यह वही बिहार था जिसने अंग्रेजों के साम्राज्य को चुनौती देने की क्षमता प्रदर्शित की और राष्ट्र को स्वतंत्रता की ओर एक निर्णायक मार्ग पर अग्रसर किया।

चंपारण सत्याग्रह 1917 :

1917 में हुआ चंपारण सत्याग्रह न केवल महात्मा गांधी का भारत में पहला राजनीतिक आंदोलन था, बल्कि यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ भी सिद्ध हुआ। इस आंदोलन की शुरुआत एक साधारण किसान राजकुमार शुक्ल के आग्रह से हुई, जिसने गांधीजी को चंपारण आने के लिए प्रेरित किया। यह आंदोलन ब्रिटिश शासन के शोषणकारी नीतियों के खिलाफ एक जनप्रतिरोध था, और इसने भारत में गांधीवादी आंदोलन की आधारशिला रखी। राजकुमार शुक्ल बिहार के एक साधारण किंतु जागरूक किसान थे, जो चंपारण जिले के किसानों की समस्याओं से पीड़ित थे। वे 'तीनकठिया' प्रथा के अंतर्गत किसानों की दुर्दशा को गांधीजी के सामने रखना चाहते थे। इस प्रथा के अनुसार, किसानों को अपनी जमीन के एक बड़े हिस्से पर नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जाता था, जिससे उन्हें न आर्थिक लाभ होता था और न ही स्वतंत्रता। राजकुमार शुक्ल ने गांधीजी से मुलाकात की और उनसे बार–बार आग्रह किया कि वे चंपारण आकर स्वयं स्थिति का निरीक्षण करें। गांधीजी अंततः शुक्ल की जिद और समर्पण से प्रभावित होकर अप्रैल 1917 में चंपारण पहुँचे।

चंपारण पहुँचने पर गांधीजी ने पाया कि वहां के किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। ब्रिटिश नीलहे साहूकार किसानों को न केवल जबरन नील की खेती करने पर मजबूर करते थे, बल्कि इसके लिए उन्हें अत्यल्प भुगतान करते थे। किसानों को उच्च करों और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, और विरोध करने पर उन्हें प्रताड़ित किया जाता था। न अदालतें उनकी सुनती थीं, न प्रशासन उनकी मदद करता था। यही नहीं, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाएं भी वहाँ के लोगों को उपलब्ध नहीं थीं। यह स्पष्ट था कि पूरा प्रशासन अंग्रेजी जमींदारों और व्यापारियों के पक्ष में खड़ा था। जब गांधीजी ने किसानों की समस्याओं को समझना और उनके बयान दर्ज करना शुरू किया, तो ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें चंपारण छोड़ने का आदेश दिया। परंतु गांधीजी ने स्पष्ट कहा कि यह एक नैतिक कर्तव्य है और वे कानून की नहीं, बल्कि न्याय की सेवा कर रहे हैं। जब उन्हें अदालत में पेश किया गया, तो उन्होंने दंड स्वीकार करने की बात कही, लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया कि अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना उनका धर्म है। इस साहसी रुख से प्रशासन हिल गया और अंततः सरकार को पीछे हटना पड़ा। गांधीजी ने चंपारण में केवल राजनीतिक प्रतिरोध ही नहीं किया, बल्कि उन्होंने वहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता सुधार की दिशा में भी कार्य शुरू किया। उनकी टीम ने गांवों में स्कूल खोलने, सफाई के महत्व को समझाने, और आत्मनिर्भरता की भावना जगाने के प्रयास किए। यह आंदोलन एक व्यापक सामाजिक सुधार आंदोलन बन गया, जिसमें राजनीतिक चेतना के साथ–साथ नैतिक जागरण का समावेश था।

चंपारण सत्याग्रह ने यह प्रमाणित कर दिया कि सत्य और अहिंसा की शक्ति केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक भी है। यह आंदोलन गांधीजी के लिए भारत में एक प्रयोगशाला बन गया, जहां उन्होंने देखा कि बिना हिंसा के, जनसहभागिता के माध्यम से अन्याय के विरुद्ध प्रभावशाली प्रतिरोध संभव है। इस आंदोलन ने बिहार को न केवल स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्यधारा में लाया, बल्कि भारत की जनता में भी एक नई राजनीतिक चेतना का संचार किया। यह गांधीवादी युग की शुरुआत थी, जिसने आगे चलकर असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे आंदोलनों को जन्म दिया।

सत्याग्रह और अहिंसा का प्रयोग :

चंपारण सत्याग्रह में महात्मा गांधी ने अपने दो प्रमुख सिद्धांतों सत्याग्रह और अहिंसा का व्यावहारिक और प्रभावी प्रयोग किया। यह आंदोलन न केवल इन सिद्धांतों की शक्ति को प्रमाणित करने वाला पहला उदाहरण था, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक नैतिक और सांस्कृतिक क्रांति की भी शुरुआत थी। गांधीजी ने इसे केवल एक राजनैतिक संघर्ष न मानकर एक नैतिक दायित्व के रूप में स्वीकार किया, जहाँ अन्याय के विरुद्ध बिना हिंसा के खड़ा होना उनका और किसानों का अधिकार था। जब गांधीजी चंपारण पहुँचे, तब उन्होंने देखा कि नील की खेती के लिए किसानों को जबरन बाध्य किया जा रहा था और 'तीनकठिया' प्रथा के तहत उन्हें अत्यंत कम भुगतान मिल रहा था। किसान भय और गरीबी से दबे हुए थे, और अंग्रेजों के विरोध का साहस नहीं कर पा रहे थे। गांधीजी ने किसी भी प्रकार की हिंसा या उग्र प्रतिरोध का रास्ता न अपनाकर, अहिंसात्मक तरीके से किसानों की समस्याओं को सामने लाने का निर्णय लिया। उन्होंने गाँव–गाँव जाकर किसानों के बयान दर्ज किए और अंग्रेज अधिकारियों के सामने तथ्यों के आधार पर उनकी समस्याओं को प्रस्तुत किया।

जब अंग्रेज अधिकारियों ने गांधीजी को चंपारण छोड़ने का आदेश दिया, तो उन्होंने विनम्रतापूर्वक असहयोग किया और कहा कि वे अन्याय के विरुद्ध संघर्ष को अपना नैतिक कर्तव्य मानते हैं। उन्होंने अदालत में भी स्पष्ट कर दिया कि यदि उन्हें दंडित किया जाता है, तो वे उसे सहर्ष स्वीकार करेंगे। यह साहसी और शांतिपूर्ण रुख अंग्रेजी प्रशासन को असमंजस में डाल गया और जनता के भीतर आत्मबल का संचार हुआ। गांधीजी के सत्याग्रह के दबाव में एक जांच समिति गठित की गई, जिसमें गांधीजी को भी सदस्य बनाया गया। उनके प्रयासों से अंग्रेज सरकार ने 'तीनकठिया' प्रथा को समाप्त कर दिया और किसानों को उनकी जमीनों पर खेती करने की स्वतंत्रता मिली। उन्हें आर्थिक रूप से भी राहत प्रदान की गई और अत्याचारों से काफी

हद तक मुक्ति मिली। इस प्रकार चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी ने सिद्ध कर दिया कि सत्य और अहिंसा केवल सिद्धांत नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और जनकल्याण प्राप्त करने के लिए अत्यंत प्रभावशाली हथियार हैं। यह आंदोलन आगे के सभी गांधीवादी आंदोलनों की नींव बना।

सामाजिक जागरूकता और परिणाम

चंपारण सत्याग्रह केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि यह बिहार की सामाजिक चेतना को जगाने वाला एक ऐतिहासिक क्षण था। यह आंदोलन उस समय शुरू हुआ जब किसानों को ब्रिटिश नीलहों द्वारा जबरदस्ती 'तीनकठिया' व्यवस्था के तहत नील की खेती करने पर मजबूर किया जा रहा था। उन्हें न तो पर्याप्त मुआवजा मिलता था, और न ही खेती या उत्पादन की स्वतंत्रता। गांधीजी ने चंपारण में पहुँचकर इन पीड़ित किसानों की व्यथा को सुना और अहिंसा व सत्याग्रह के माध्यम से उनके अधिकारों को स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया। गांधीजी ने गाँव–गाँव जाकर किसानों के बयान दर्ज किए, जिससे पहली बार किसानों को लगा कि कोई उनके दर्द को गंभीरता से सुन रहा है। उन्होंने किसानों को समझाया कि अन्याय के सामने चुप रहना भी अन्याय का समर्थन करना है। इस संवाद और संगठन के माध्यम से किसानों में आत्मबल और जागरूकता का संचार हुआ। गांधीजी का यह तरीका बिना हिंसा के, शांति से अपनी बात कहना और अधिकारों के लिए डटकर खड़े रहना किसानों के लिए बिल्कुल नया था, और उन्होंने इसे पूरे समर्पण के साथ अपनाया।

इस आंदोलन के परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार को मजबूर होकर एक जांच समिति का गठन करना पड़ा, जिसमें गांधीजी को भी शामिल किया गया। उनके प्रयासों से तीनकठिया प्रथा समाप्त हुई और किसानों को नील की अनिवार्य खेती से मुक्ति मिली। यह पहला अवसर था जब किसानों ने अपने अधिकारों के लिए संगठित होकर बिना हिंसा के जीत हासिल की। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा और वे भविष्य में भी अन्याय के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरित हुए।

चंपारण सत्याग्रह ने बिहार के समाज में एक नई ऊर्जा का संचार किया। यह आंदोलन केवल किसानों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि महिलाओं, विद्यार्थियों, शिक्षकों और बुद्धिजीवियों को भी प्रेरित किया। अनेक स्थानों पर स्वयंसेवी विद्यालय, स्वच्छता अभियान और स्वदेशी उत्पादों के प्रयोग शुरू हुए। गांधीजी ने स्वयं शिक्षकों की एक टीम के साथ गांवों में शिक्षा और जनसेवा की नींव रखी, जिससे सामाजिक सुधार की प्रक्रिया तेज हुई। इस प्रकार चंपारण सत्याग्रह ने न केवल किसानों के अधिकारों की रक्षा की, बल्कि बिहार में एक व्यापक जनजागरण और सामाजिक पुनर्निर्माण का भी मार्ग प्रशस्त किया, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत आधार दिया।

खेड़ा सत्याग्रह और बिहार में प्रसार

खेड़ा सत्याग्रह, जो 1918 में गुजरात के खेड़ा जिले में हुआ, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के नेतृत्व में होने वाला दूसरा प्रमुख आंदोलन था। यह आंदोलन किसानों की करमाफी की मांग को लेकर शुरू किया गया था, जब सूखा और फसल की बर्बादी के बावजूद ब्रिटिश सरकार किसानों से पूर्ण लगान वसूलना चाहती थी। गांधीजी ने यहां भी सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों का पालन करते हुए किसानों को संगठित किया और अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा दी। यद्यपि यह आंदोलन भौगोलिक रूप से गुजरात तक सीमित था, लेकिन इसके विचार, रणनीतियाँ और नैतिक संदेश पूरे भारत में, विशेष रूप से बिहार में, तेजी से फेले। बिहार में खेड़ा सत्याग्रह का प्रभाव सामाजिक और राजनीतिक रूप से गहरा रहा। चंपारण सत्याग्रह के ठीक एक वर्ष बाद खेड़ा में हुआ यह आंदोलन गांधीवादी आंदोलनों की श्रृंखला को और भी मजबूत बनाता है।

बिहार के लोगों ने देखा कि कैसे सत्याग्रह, संगठन और अहिंसा के माध्यम से एक और क्षेत्र में किसानों ने अपने अधिकारों की रक्षा की। यह आंदोलन गांधीजी के सिद्धांतों की व्यापकता और व्यावहारिकता का प्रतीक बन गया, जिससे बिहार के किसानों, बुद्धिजीवियों और स्वतंत्रता सेनानियों को एक नया उत्साह और प्रेरणा मिली। खेड़ा सत्याग्रह ने बिहार के युवाओं

और समाज सुधारकों को यह सिखाया कि किसानों के लिए न्याय केवल विद्रोह से नहीं, बल्कि नैतिक साहस और संगठित शांतिपूर्ण संघर्ष से भी पाया जा सकता है। कई स्थानों पर किसानों और समाजसेवियों ने अपने स्तर पर छोटे–छोटे संगठन बनाकर स्थानीय समस्याओं के समाधान में गांधीवादी तरीके अपनाने शुरू किए। यह आंदोलन विशेष रूप से बिहार में उन लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बना जो अभी तक केवल चंपारण आंदोलन से ही गांधीवाद को जोड़ते थे। खेड़ा सत्याग्रह ने बिहार में स्वदेशी वस्त्रों के उपयोग, शिक्षा में सुधार, और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान को भी गति दी। गांधीजी के अनुयायियों ने गांवों में जाकर स्वयंसेवी कार्य प्रारंभ किए और सत्याग्रह के माध्यम से अन्याय के विरुद्ध संगठित प्रयासों को बढ़ावा दिया। इस प्रकार, खेड़ा सत्याग्रह भले ही गुजरात में हुआ हो, लेकिन इसके नैतिक सिद्धांतों और रणनीतियों का प्रभाव बिहार के जनजीवन, सामाजिक चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन में गहराई से अनुभव किया गया।

खेत मजदूरों और किसानों का सहयोग

बिहार के खेत मजदूरों और किसानों ने महात्मा गांधी के आंदोलनों से प्रेरणा लेकर अपने–अपने क्षेत्रों में अन्याय और शोषण के विरुद्ध संघर्ष की अलख जगाई। चंपारण सत्याग्रह के बाद गांधीजी के सिद्धांतों, अहिंसा, सत्याग्रह और आत्मनिर्भरता का प्रभाव बिहार के ग्रामीण समाज में गहराई से महसूस किया गया। किसानों ने महसूस किया कि वे संगठित होकर और शांतिपूर्ण तरीकों से अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकते हैं। चंपारण आंदोलन के बाद गांधीजी का प्रभाव केवल नील किसानों तक सीमित नहीं रहा। मगध, शाहाबाद, दरभंगा, और गया जैसे क्षेत्रों में भी किसानों और खेत मजदूरों ने स्थानीय जमींदारों के अत्याचार, बेगार प्रथा और भूमि–लगान के खिलाफ आवाज उठानी शुरू कर दी। छोटे–छोटे गांवों में स्वयंसेवक समूह बने, जो गांधीवादी तरीके से लोगों को संगठित करते थे। इन समूहों ने ग्रामीणों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि अन्याय के सामने झुकना अनैतिक है। खेत मजदूर, जो सदियों से जातिगत और आर्थिक शोषण का शिकार थे, गांधीजी की विचारधारा से विशेष रूप से प्रभावित हुए। उन्होंने पहली बार अपने अस्तित्व और अधिकारों के प्रति चेतना प्राप्त की। सामाजिक न्याय, भूमि सुधार, और स्वराज की अवधारणाएं इन आंदोलनों के माध्यम से गांव–गांव तक पहुंचने लगीं। बिहार में यह आंदोलन केवल राजनीतिक स्वाधीनता की लड़ाई नहीं रहा, बल्कि यह सामाजिक क्रांति का माध्यम भी बन गया। इस प्रकार गांधीजी के आंदोलनों ने बिहार के किसानों और खेत मजदूरों को आत्मसम्मान, संगठन और अहिंसक प्रतिरोध का मार्ग दिखाया, जिससे उन्होंने स्थानीय स्तर पर भी संघर्ष शुरू किया और जनजागरण की प्रक्रिया को तेज किया।

भारत छोड़ो आंदोलन 1942

1942 में जब महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन की घोषणा की, तो यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सबसे निर्णायक और उग्र चरण बन गया। गांधीजी का नारा था, "करो या मरो", जिसने समस्त देशवासियों को एकजुट कर दिया। इस आंदोलन का प्रभाव बिहार में विशेष रूप से तीव्र और व्यापक रूप में देखा गया। बिहार की धरती, जो पहले से ही चंपारण सत्याग्रह, असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के अनुभवों से राजनीतिक रूप से परिपक्व हो चुकी थी, इस निर्णायक संघर्ष के लिए तैयार थी। 9 अगस्त 1942 को जब गांधीजी और कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार किया गया, तो पूरे देश की तरह बिहार में भी जनता का आक्रोश फूट पड़ा। यहां छात्र, मजदूर, किसान, व्यापारी और महिलाएं सभी वर्गों ने स्वतःस्फूर्त रूप से आंदोलन में भाग लिया। पटना, गया, दरभंगा, आरा, चंपारण, मुजफ्फरपुर और भागलपुर जैसे प्रमुख शहरों से लेकर छोटे गांवों तक आंदोलन की लहर फैल गई। छात्रों ने स्कूल–कॉलेज छोड़कर आंदोलन की बागडोर संभाल ली। उन्होंने सरकारी इमारतों, डाकघरों, रेलवे लाइनों, और पुलिस थानों पर प्रदर्शन किए। जगह–जगह सत्याग्रह और प्रतिरोध की गतिविधियाँ हुईं। पटना विश्वविद्यालय और अन्य शिक्षण संस्थानों के छात्र आंदोलनों के अगुवा बने। दूसरी ओर, मजदूरों और किसानों ने भी रेल हड़ताल, काम बंदी और खेतों में काम न करने जैसे उपायों से ब्रिटिश प्रशासन को चुनौती दी।

इस आंदोलन की एक विशेषता यह रही कि गांधीजी के जेल में होने के बावजूद आंदोलन पूरी तरह से जनस्फूर्त और विकेंद्रित था। इसमें स्थानीय नेतृत्व ने अहम भूमिका निभाई। जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया और डॉ. राजेंद्र प्रसाद जैसे नेताओं के विचारों से प्रभावित युवाओं ने भूमिगत आंदोलन का संचालन किया। बिहार के कई हिस्सों में ''समांतर सरकारें'' स्थापित कर दी गईं, जो ब्रिटिश प्रशासन को चुनौती देने लगीं। "आजाद दस्ता" जैसे संगठन बनाकर युवाओं ने हथियारबंद प्रतिरोध भी किया। बिहार में आंदोलन की तीव्रता के कारण ब्रिटिश सरकार ने दमन का सहारा लिया। सैकड़ों लोगों को गिरफ्तार किया गया, गोलीबारी हुई, और अनेक स्थानों पर मार्शल लॉ जैसी स्थिति बना दी गई। लेकिन यह दमन आंदोलन की भावना को दबा नहीं सका, बल्कि इससे लोगों का संघर्ष और तेज हो गया। भारत छोड़ो आंदोलन ने बिहार में स्वतंत्रता के लिए अंतिम निर्णायक ऊर्जा का संचार किया। जनता को यह अहसास हुआ कि स्वतंत्रता अब दूर नहीं, और यदि सामूहिक रूप से संघर्ष किया जाए तो अंग्रेजी शासन को झुकाया जा सकता है। यह आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम का ऐसा चरण था जिसमें बिहार की भागीदारी अत्यंत गर्वपूर्ण, प्रभावशाली और प्रेरणादायक रही।

प्रमुख घटनाएँ और आंदोलन के परिणाम

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बिहार के विभिन्न जिलों में कई प्रमुख घटनाएँ घटित हुईं, जिन्होंने न केवल इस आंदोलन की तीव्रता को दर्शाया, बल्कि स्वतंत्रता की दिशा में निर्णायक प्रभाव भी डाला। बिहार आंदोलन की एक मुख्य भूमि बन गया, जहाँ गांव से शहर तक हर वर्ग के लोगों ने भाग लिया और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशक्त प्रतिरोध खड़ा किया।

पटना में आंदोलन की शुरुआत छात्रों और युवाओं द्वारा की गई। छात्रों ने कॉलेज और विश्वविद्यालयों का बहिष्कार कर जुलूस निकाले, पोस्टर चिपकाए और सरकारी दफ्तरों पर प्रदर्शन किया। कई स्थानों पर पुलिस से सीधी झड़पें हुईं। आंदोलन के उग्र होने पर पुलिस ने लाठीचार्ज और गोलियाँ चलाईं, जिससे अनेक लोग घायल हुए और कुछ शहीद भी हुए। मुजफ्फरपुर में आंदोलन विशेष रूप से प्रभावशाली रहा। वहाँ रेलवे लाइनें उखाड़ी गईं, डाकघर जलाए गए और पुलिस चौकियों को निशाना बनाया गया। ग्रामीणों और युवाओं ने मिलकर ''समांतर सरकार'' जैसी स्वशासी संरचनाएँ स्थापित कीं, जिससे ब्रिटिश प्रशासन असहाय हो गया। मुजफ्फरपुर का आंदोलन संगठित और सशक्त था।

भागलपुर में श्रमिकों और किसानों ने हड़ताल और विरोध प्रदर्शन किए। रेलवे मजदूरों ने ट्रेनों का संचालन ठप कर दिया, जिससे प्रशासन को बड़ा झटका लगा। भागलपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में भी अंग्रेजी राज के खिलाफ स्थानीय स्तर पर आंदोलन हुए, जिनमें महिलाओं ने भी भाग लिया। इसके अलावा दरभंगा, गया, सारण, और चंपारण जैसे जिलों में भी आंदोलन की लहर फैल गई। गांवों में 'आजाद दस्ते' बनाए गए जो ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ हथियारबंद संघर्ष भी करते थे। कई जगहों पर सामंती ठिकानों को निशाना बनाया गया। इन आंदोलनों के परिणामस्वरूप ब्रिटिश प्रशासन की पकड़ कमजोर हुई, और जनता में आत्मविश्वास तथा स्वतंत्रता की भावना दृढ़ हुई। हालांकि सरकार ने कड़ा दमन किया, लेकिन आंदोलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब पूरी तरह से स्वतंत्रता के लिए तैयार है। बिहार की यह भूमिका ऐतिहासिक रूप से स्वतंत्रता संग्राम की नींव को और मजबूत करने वाली सिद्ध हुई।

गांधीजी की उपस्थिति और नेतृत्व :

भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत भले ही 9 अगस्त 1942 को हुई हो, लेकिन इसकी तैयारी और नैतिक ऊर्जा गांधीजी के नेतृत्व से ही प्रेरित थी। गांधीजी ने इस आंदोलन को "करो या मरो" के मंत्र से शुरू किया, जिससे पूरे देश में स्वतंत्रता के लिए अंतिम निर्णायक संघर्ष की भावना जागृत हुई। हालांकि आंदोलन की घोषणा के तुरंत बाद गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया और वे प्रत्यक्ष रूप से आंदोलन में शामिल नहीं हो सके, फिर भी उनका नैतिक नेतृत्व और पहले से दी गई दिशा–निर्देशों ने आंदोलन को गति दी। बिहार में गांधीजी की उपस्थिति भौतिक रूप से सीमित थी, लेकिन उनकी विचारधारा ने लोगों के

मन में क्रांति की आग जलाई। चंपारण सत्याग्रह से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक, गांधीजी ने बिहार में अहिंसा, सत्याग्रह, और जनसंगठन की जो परंपरा शुरू की थी, वही 1942 में जनविद्रोह में परिवर्तित हुई। गांधीजी की विचारधारा के प्रभाव से ही बिहार के युवाओं, किसानों और छात्रों ने बिना किसी औपचारिक नेतृत्व के, स्थानीय स्तर पर स्वतंत्रता संग्राम को जारी रखा। गांधीजी की दी हुई प्रेरणा से जयप्रकाश नारायण, रामानंद तिवारी और अन्य नेताओं ने भूमिगत रहकर आंदोलन का संचालन किया। गांधीजी के नेतृत्व का यही सबसे बड़ा योगदान था कि उन्होंने लोगों को इतना आत्मबल दे दिया था कि उनकी अनुपस्थिति में भी आंदोलन न केवल जारी रहा, बल्कि और उग्र और व्यापक हो गया। इस प्रकार, गांधीजी भले ही शारीरिक रूप से बिहार में न थे, लेकिन उनका नैतिक नेतृत्व हर गांव, हर युवा और हर संघर्षकर्ता के भीतर जीवित था।

गांधीवादी आंदोलन का सामाजिक प्रभाव :

गांधीजी के नेतृत्व में चले आंदोलनों का बिहार के समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। चंपारण सत्याग्रह से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक, गांधीजी ने सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव, अशिक्षा, और महिलाओं की उपेक्षा जैसे मुद्दों को राजनीतिक आंदोलन के साथ जोड़ा। उन्होंने केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की बात नहीं की, बल्कि समाज के हर वर्ग को न्याय और समानता की दृष्टि से देखा। गांधीजी ने ग्रामीण समाज को संगठित करने पर बल दिया। उन्होंने शिक्षा, स्वच्छता, और महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया। बिहार के गांवों में स्वयंसेवी विद्यालयों की स्थापना की गई, जहां लड़के–लड़कियों दोनों को पढ़ाया जाता था। महिलाओं ने पहली बार सार्वजनिक आंदोलनों में भाग लेना शुरू किया, जो उस समय एक सामाजिक क्रांति के समान था। गांधीजी ने छुआछूत के खिलाफ आवाज उठाई और हरिजनों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया, जिससे बिहार जैसे पारंपरिक समाज में नई चेतना का उदय हुआ। सत्याग्रह और अहिंसा जैसे सिद्धांतों ने सामाजिक सहिष्णुता और नैतिकता को बल दिया। लोगों ने समझा कि सामाजिक बदलाव केवल हिंसा से नहीं, बल्कि नैतिक और सामूहिक प्रयासों से संभव है। गांधीजी के आंदोलनों ने समाज को आत्मावलोकन के लिए प्रेरित किया और सामाजिक पुनर्गठन की दिशा में ठोस कदम उठाने को प्रोत्साहित किया। इसका प्रभाव आज भी बिहार की सामाजिक संरचना में महसूस किया जा सकता है।

गांधीवादी आंदोलन का राजनीतिक प्रभाव :

गांधीजी के आंदोलनों ने बिहार में राजनीतिक चेतना को अत्यधिक गहराई और व्यापकता प्रदान की। चंपारण सत्याग्रह से ही राजनीतिक जागरूकता की जो लहर शुरू हुई थी, वह असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और अंततः भारत छोड़ो आंदोलन तक पूरे प्रदेश में फैल गई। गांधीजी ने आम जनता, विशेषकर किसानों, मजदूरों और युवाओं को राजनीति से जोड़ा। इससे पहले तक राजनीति केवल पढ़े–लिखे या संपन्न वर्ग तक सीमित थी, लेकिन गांधीवादी आंदोलनों ने इसे जनआंदोलन बना दिया। बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में भी राजनीतिक चर्चाएं होने लगीं। लोग अपने अधिकारों, स्वतंत्रता, और दमन के खिलाफ संगठित होने लगे। कांग्रेस का आधार गांव–गांव में फैल गया और जनता का सीधा जुड़ाव राजनीति से हुआ। जयप्रकाश नारायण, राजेंद्र प्रसाद, श्रीकृष्ण सिंह, रामानंद तिवारी जैसे नेताओं ने गांधीजी की प्रेरणा से जनता के बीच जाकर राजनीतिक नेतृत्व विकसित किया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बिहार में भूमिगत आंदोलन, समानांतर सरकारें और आजाद दस्ता जैसे संगठनों की स्थापना हुई, जिससे स्पष्ट हो गया कि अब जनता स्वयं नेतृत्व करने के लिए तैयार है। यह राजनीति के लोकतंत्रीकरण का प्रतीक था, जहाँ हर वर्ग, हर व्यक्ति, और हर समुदाय ने स्वतंत्रता को अपना अधिकार मानकर संघर्ष किया। इस प्रकार गांधीवादी आंदोलन ने बिहार में एक सशक्त राजनीतिक संस्कृति का निर्माण किया, जिसने न केवल ब्रिटिश शासन को चुनौती दी, बल्कि स्वतंत्र भारत के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों की नींव भी रखी।

निष्कर्ष :

महात्मा गांधी के नेतृत्व में हुए आंदोलनों ने बिहार के समाज, राजनीति और चेतना को गहराई से प्रभावित किया। चंपारण सत्याग्रह से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक, गांधीजी ने न केवल बिहार को स्वतंत्रता संग्राम की अग्रिम पंक्ति में खड़ा किया, बल्कि सामाजिक जागरूकता और आत्मनिर्भरता की भावना भी विकसित की। किसानों और मजदूरों को उनके अधिकारों का बोध हुआ और उन्होंने अपने शोषण के विरुद्ध संगठित होकर अहिंसात्मक तरीके से संघर्ष करना सीखा। गांधीजी के विचारों ने बिहार की जनता को अन्याय के खिलाफ खड़ा होने का साहस दिया और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि वे भी स्वतंत्र भारत के निर्माता बन सकते हैं।

गांधीवादी आंदोलनों ने न केवल राजनीतिक आजादी के लिए संघर्ष को गति दी, बल्कि सामाजिक क्रांति की नींव भी रखी। जातिगत भेदभाव, अशिक्षा, और महिला उपेक्षा के विरुद्ध जागरूकता आई। शिक्षा, स्वच्छता, और आत्मनिर्भरता जैसे विषय गांव–गांव में पहुंचने लगे। बिहार का आम नागरिक केवल आंदोलनकारी नहीं, बल्कि जागरूक और उत्तरदायी नागरिक बन गया। आज भी बिहार के समाज में गांधीवादी आंदोलनों की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अहिंसा, सत्य, और नैतिकता जैसे सिद्धांत आज भी सामाजिक आंदोलनों और जनचेतना का हिस्सा हैं। कई संस्थाएँ गांधीजी के विचारों पर आधारित कार्य कर रही हैं, जैसे ग्रामीण शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, और शांति स्थापना। बिहार के राजनीतिक परिदृश्य में भी सत्याग्रह और जनसंघर्ष की परंपरा जीवित है। गांधीजी ने जो बीज बोया था, वह आधुनिक बिहार की चेतना में एक स्थायी मूल्य बन चुका है। गांधीवादी आंदोलनों ने बिहार को केवल स्वतंत्रता नहीं, बल्कि एक विचारधारा दी, जो आज भी मार्गदर्शक बनी हुई है।

संदर्भ सूची :–

1. Rajendra Prasad (1946) *India's Struggle for Freedom*, Publications Division, Government of India, New Delhi
2. Bipan Chandra (1988) *India's Struggle for Independence*, Penguin Books India, New Delhi
3. R.C. Majumdar (1962) *History of the Freedom Movement in India*, Bharatiya Vidya Bhavan, Mumbai
4. Ramachandra Guha (2011) *Gandhi: The Years That Changed the World*, Penguin Viking, New Delhi
5. Bimal Prasad (1971) *Gandhi: An Overview*, Oxford University Press, New Delhi
6. Sumit Sarkar (1983) *Modern India: 1885–1947*, Macmillan, London
7. Judith M. Brown (1994) *Gandhi: Prisoner of Hope*, Yale University Press, New Haven
8. Thomas R. Metcalf (1995) , *Ideologies of the Raj*, Cambridge University Press, Cambridge
9. Anil Seal (1971) *The Emergence of Indian Nationalism*, Cambridge University Press, Cambridge
10. Gyanendra Pandey (1990), *The Construction of Communalism in Colonial North India* , Oxford University Press, New Delhi
11. David Hardiman (2003) *Gandhi in His Time and Ours*, Permanent Black, Ranikhet
12. Ayesha Jalal (1985) *The Sole Spokesman: Jinnah, the Muslim League and the Demand for Pakistan*, Cambridge University Press, Cambridge
13. Partha Chatterjee (1986) *Nationalist Thought and the Colonial World*, Zed Books, London
14. Sekhar Bandyopadhyay (2004) *From Plassey to Partition: A History of Modern India*, Orient Blackswan, Hyderabad'
15. Sumit Guha (1999) *Environment and Ethnicity in India* , Cambridge University Press, Cambridge